

डॉ. मीरा सिंह 'मीरा'
डुमराँव, जिला-बक्सर, बिहार

पसरा सन्नाटा

गाँव -गाँव पसरा सन्नाटा
परिंदा नजर नहीं है आता।
सूनी-सूनी गलियां सारी,
राहें थकी सभी दुखियारी।

भींगी पलकें दुख से भारी
तन्हाई की लगती मारी।।
जाने कैसा यह विकास है
मन से हर कोई उदास है।

पल पल बढ़ती रही प्यास है
हर कोई अब बदहवास है।।
तन्हाई का गीत सुनाती
हवा गाँव से जब भी आती।

भूली बिसरी याद दिलाती,
बीती बातों को दुहराती।
जब भी मन की खिड़की खोलें
बीती यादें हँसकर बोलें।

गए कहां वो रिश्ते नाते,
साथ कभी थे हंसते गाते।
जो थे मन में दीप जलाते
यादों में वो हैं मुस्काते।।

सोचो, सोचो-पाया क्या

सोचो, सोचो—पाया क्या?
सोचो, आज गँवाया क्या?
जगत फकीरों का डेरा,
साथ यहाँ था लाया क्या?

चिड़िया चुग गई खेत सभी,
अब बैठे पछताया क्या?
बीता समय न लौटेगा,
उसको फिर से बुलाया क्या?

वक्त कहे हँसकर सबसे—
मुझको कभी मनाया क्या?
चलते-चलते छूट गया जो,
उसको फिर से पाया क्या?

जो हर फन में माहिर हैं,
उनको हम समझाएँ क्या?
अपनी ही कमियाँ न देखीं,
दूजों पर इल्ज़ाम लगाए क्या?

इल्ज़ाम लगाने वालों,
खुद से नज़र मिलाएँ क्या?
पहले अपने भीतर झाँकें,
फिर जग को समझाएँ क्या?

सोचो, सोचो—पाया क्या?
सोचो, आज गँवाया क्या?
जगत फकीरों का डेरा,
साथ यहाँ तुम लाया क्या?